International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 352-354

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 352-354
www.allresearchjournal.com
Received: 18-11-2019
Accepted: 19-12-2019

प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत।

Correspondence
प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

श्यौराज सिंह बेचौन की कविताओं में जाति एवं वर्ग–चेतना

प्रियंका कुमारी

सारांश
साहित्य और इतिहास एक–दूसरे के विरोधाभासी नहीं है, बल्कि पूरक हैं, साहित्य के दो पक्ष होते हैं, पहला ऐतिहासिक और दूसरा राजनीतिक पक्ष। ''श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कविताओं में जाति एव वर्ग–चेतना'' में दलित समाज के विकास के लिए लिखा गया है, जिसमें दलित समुदाय में शिक्षा की कमी है, जिस दिन समाज के बच्चे अपना समाज का इतिहास समझ जाऐंगे, उस दिन से अपना मौलिक अधिकार और किसी ठाकुरों की गुलामी नहीं करेंगे, श्यौराज सिंह की कई कविता में समाज को जगाने का काम किया गया है, अम्बेडकर के तीन मंत्र प्रमुख हैं, शिक्षित बनों, संगठित हो, संघर्ष करो। दलित समाज का मुख्य रूप से शिक्षा ही एकमात्र साधन है।

मूल शब्दः श्यौराज सिंह, जाति एवं वर्ग–चेतना

प्रस्तावना
प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त करने के लिए विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में सक्रिय रहे। बेचैन जी मार्क्सवादी विचारधारा से भी प्रभावित थे, किन्तु बाद में वे इससे निराश होकर अम्बेडकर के सिद्धांत को अपना लिया। इस प्रकार प्रो० आदरनीय ''श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कविताओं में जाति एवं वर्ग–चेतना'' में जितनी कविताओं का जिक्र किया है, उसमें दलित समाज में जागृति पैदा करने का अधिक से अधिक प्रयास किया गया है। सामाजिक बुराईयों को कविताओं के माध्यम से नष्ट करने की भावना प्रबल रूपों में किया गया हैं श्यौराज सिंह 'बेचैन' ''नई फसल कुछ अन्य कविताऐं'' संग्रह में लिखते हैं, 'जब मैं छात्रों, किसानों और दलितों के बीच सार्वकालिक सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में एक बेहतर सपना लेकर काम कर रहा था, लेकिन समाज में कई तरह के सोच वाले व्यक्ति भी होते हैं, जो हमेशा एक दूसरों के पाँव खिंचने की कोशिश करते हैं। इनकी कविताएँ सामाजिक समस्याओं को जानने–समझने और उससे मुठभेड़ करने में सहायता करती है।
हिन्दी दलित काव्याकाश को जिन्होंने जाति एवं वर्ग–चेतना की मशाल से रौशन किया, उनमें दलित साहित्यकार श्यौराज सिंह बेचौन न अग्रगण्य प्रतीत होते हैं। वैसे तो श्यौराज जी पत्रकार भी हैं और अध्यापक भी, कथाकार भी लेकिन सर्वप्रथम वे एक अति संवेदशनील कवि भी हैं। यही कारण है कि प्रख्यात आलोचक प्रो० गोविन्द प्रसाद ने भी उनके काव्य–संग्रह 'नयी फसल' की भूमिका के रूप में 'श्यौराज सिंह बेचौन की कविता' शीर्षक के अंतराल में लिखा है– ''सबसे पहले 'नयी फसल' की कविताओं पर बात करते हैं। ये कविताएँ एक ही परिवेश से आयी जो जनविरोधी और पूँजीवादी हैं..... .संग्रह की अधिकांश कविताओं में हमें वर्ग–चेतना देखने को मिलती है। तीन कविताओं में जाति–चेतना भी है, पर एक कविता 'बेड़ियाँ तोड़ दो' में हमें अम्बेडकर का जिक्र मिलता है।'' [1]
इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि इनकी कवताओं का स्वर जनवादी है। जनवाद के कारण जी जाति एवं वर्ग–चेतना की मशाल काव्य–पंक्तियों में प्रज्जवलित–सी देखती है। जनवादी कवि वीरेन डंगवाल ने भी लिखा है– ''बेचौन एक प्रतिबद्ध राजनीतिक कार्यकर्त्ता हैं और उसकी कविताएँ एक सतत् कार्यकर्त्ता की कविताएँ हैं....।'' [2] यही कारण है कि उनकी कविताएँ जनवादी हैं। जहाँ जनवाद है, वही जाति एवं वर्ग की चेतनाएँ अंकुरित होती हैं। जहाँ ऐसी रचनाओं का आलोक विकीर्ण होता है, वहाँ व्यंग्य–वाण भी चलने लगते हैं। इनके काव्य में व्यग्य की भी प्रधानता है। 'क्रोञ्च हूँ मैं' काव्य–संग्रह व्यग्यात्मक कविताओं का ही आधार है। इनके काव्य–संग्रहों में नयी फसल कुछ अन्य कविताएँ, 'भोर के अंधेरे', 'क्रौञ्च हूँ मैं' और 'चमार की चाय' प्रमुख हैं।
'भोर के अँधेरे में' कुल चौरासी कविताओं का संग्रह है। प्रथम कविता में जहाँ 'आशा' है, अंतिम कविता 'आप जानते होंगे' है। आशा–आलोकित कविता में परिवर्त्तन का प्रकाश है। ऐसा परिवर्त्तन जिससे भारतीयता कटती हुई प्रतीत होती है। यथा–

''बैलगाड़ी भी–
मयस्सर थी नहीं जिनको
वे हवाई–यान
में उड़ने लगे देखो।''(3)

इस परिवर्त्तन के साथ ही मानवता का जो पतन हुआ है, वह हृदय विदारक है। 'भोर के अँधेरे में' शीर्षक से भी यही प्रतीत होता है। प्रतीकात्मकता के प्रकाश से सराबोर इस संकलन की कविताओं की विशेषता है कि इनके भीतर का जलता सत्य समाज में जमी हुई सर्द परतों को गलाने में सक्षम है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी दलित, शोषित, निर्धन के विकास की योजना प्राथमिकता में नहीं, बल्कि वे केन्द्रीय परिधि से भी बाहर हो गए लगते हैं। कवि सत्ता पर आसीन उस पूरी पीढ़ी को उसकी जिम्मेदारी को याद दिलाता है। शिक्षा के व्यापारीकरण के संदर्भ में भी श्यौराज की कविताएँ आक्रोश व्यक्त करती है–

''बन्द हो गए/सरकारी स्कूल
और खुल गए,
स्वीवत्त पोषित
निजी संस्थान–दुकान
अब कैसे पढ़ पाएँगें,
दलित/आदिवासी
निर्धन पिछड़े/और
अल्पसंख्यक बच्चे?''(4)

यह एक यक्ष–प्रश्न है। भारत के भाल पर झूलता हुआ प्रश्न। दलित–विकास का मूल शिक्षा ही है, लेकिन पूँजीवादी व्यवस्था होने के कारण गरीबों से दूर हो रही है– शिक्षा, जबकि डॉ० भीमराव अम्बेदकर ने भी दलित–विकास का मूल शिक्षा ही बताया। उन्होंने दलित–विकास हेतु जो तीन मंत्र दिए उसमें भी प्रथम स्थान पर शिक्षा ही है। यथा– ''शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संघठित रहो।'' [5]

डॉ० एम.एल. परिहार ने तो अपनी जाति चेतनात्मक पुस्तक का शीर्षक ही रख दिया– ''दलितों को अनपढ़ रखने की साजिश'' और लिखा– ''शिक्षा देश की भी पीढ़ी के भविष्य का निर्धारण करती हैं। अतः इसमें एक रूपता होनी चाहिए, अराजकता नहीं।'' [6]

आलोच्य कविवर श्यौराज सिंह बेचौन ने भी इसी परिप्रेक्ष्य में अपना आक्रोश व्यक्त किया है और संदेश दिया है कि ''दलित को भोर चाहिए, तो बच्चों को खूब पढ़ाइये, उन्हें आज का अम्बेडकर बनाइये। साम्राज्यवादी विदेशी शक्तियाँ गिद्ध–दृष्टि जमाए भारत की ओर देख रही है कि यहाँ का समाज अस्पृश्यता और जातिभेद की महामारी से पहले की भाँति और दुर्बल हो जाए।''[7]

इस काव्य–संग्रह की अधिकाश कविताएँ कविताएँ दलित चेतना के विविध आयामों से संबंधित हैं, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक आयामों को रेखांकित करती हैं।

श्यौराज सिंह 'बेचौन' का दूसरा काव्य–संग्रह 'नयी फसल' है, जिसकी कविताएँ एक ऐसे परिवेश से आयी हुई प्रतीत होती है, जो जन–विरोधी है, और है पूँजीवादी। कवि ने स्वयं अपने इस संग्रह को जनवादी रचनाओं का संग्रह कहा है। इस संग्रह की कविताओं के गम्भीर अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है, कि कवि ने जाति से ज्यादा गरीबी की पीड़ा को झेला है, संत्रास को भोगा है। उन्हें जाति के सवालों ने उतना परेशान नहीं किया है, जितना वर्ग के सवालों ने बेचौन किया है। यही कारण है कि कवि ने अपनी साहित्यिक संज्ञा ही 'बेचौन' बना लिया है। संग्रह में मुख्य रूप से तीन कविताओं में वर्ग–चेतना देखने को मिलती है, लेकिन एक कविता 'बेड़ियाँ तोड़ दो' में दलित क्रान्ति के अपराजेय योद्धा बाबा साहेब अम्बेडकर का जिक्र मिलता है। यथा–

''ब्राह्मण स्वयं सर्वोपरि था बना,
मात्र पैरों में स्थान था–शूद्र का।
तब दलित बेड़ियाँ तोड़ने को उठे
उनकी जानिब इशारा हुआ भीम का।''(8)

श्यौराज जी के काव्य–संग्रहों में 'क्रोञ्च हूँ मैं' का सर्वोपरि स्थान है। संग्रह की तमाम कविताएँ व्यंग्यात्मक हैं। कवि, आलोचक केदारनाथ सिंह के अनुसार ''संग्रह की कविताओं का मुख्य–व्यंग्य है और यह कहना अनुपयुक्त न होगा, कि इस विद्या में कवि का हाथ काफी सधा हुआ है। इस संग्रह का 'अथ' ही 'श्रद्धांजलि' से हुआ है और 'इति इंतजार' से। आरम्भ और अंत का यह संयोजन अद्भुत है। इससे एक दूरगामी अर्थ की व्यंजकता भी प्रकट होती है। इन्हीं दोनों छोरों के बीच कवि का सम्पूर्ण भावालोक संचारित होता है और अक्सर बिना किसी बनाव–शृंगार के लगभग अनलंकृत। फिर व्यंग्य के लिए जो सच्ची मानवीय करूणा चाहिए, उसकी बानगी भी संग्रह की कविताओं में जहाँ–तहाँ देखी जा सकती है। यथा–

''तब बहेलिया वध करता था,
और प्रेक्षक कविता।
अब बहेलिया वध से ज्यादा.
कविताएँ करता है।
तब कविता संत्रास–जन्य थी,
अब कविता अभ्यास।''(9)

'क्रोञ्च हूँ मैं' कविता में कवि श्यौराज जी ने यह स्पष्ट करने प्रयास किया है कि सवर्णों के दलित–लेखन में अनुभूति की प्रामाणिकता क्यों नहीं है? आदिकवि वाल्मीकि ने 'रामायण' में टेलिया द्वारा 'क्रोच–पक्षी–वध' का जो मार्मिक चित्रण किया है, उसी बिम्ब को आधार बनाते हुए कवि बेचन ने लिखा है–

''आदि कविता/कोञ्च का वध देखकर पैदा हुई थी/
मैं परन्तु/आदिकवि के वंशज में से नहीं हूँ।
वाल्मीकि मैं नहीं हूँ।
क्रोञ्च हूँ मैं।''(10)

अस्तु हम कह सकते हैं कि हिन्दी दलित साहित्याकाश को जिन दलित कवियों ने हृदय के लहू में अनुभवी अँगुलियों को डुबा–डुबाकर शृंगारित किया है, दलित–जाति एवं वर्गीय चेतना के विविध आयामों को जनवादी हुंकार के साथ आलोकित किया है और शिव–सदृश मानापमान का गरल–पान किया है, उनमें प्रोफेसर, पत्रकार, साहित्यकार डॉ० श्यौराज सिंह 'बेचौन' का योगदान सागर से भी गहरा और आकाश से भी ऊँचा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

''श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कविताओं में जाति एवं वर्ग–चेतना'' में जिस समाज का वर्णन किया गया है, वह दलित, शोसित, पीड़ित, दबे, कुचले, समाज का हक और अधिकार के लिए कविता लिखी है, श्यौराज सिंह 'बेचैन' की संवेदना का मुख्य कारण गौर है, इसमें समाज में दलितों के साथ हो रहे अन्याय, की बात कही गई है, ग्रामीण समाज से लेकर शहरी समाज एवं आदिवासी समाज से लेकर दलित समाज को बचाने की ललक और समकालीन आचार–विचार को बुझने की उत्कंठा समानभाव से संचित किया गया है। समाज में जातिप्रथा बहुत बड़ा अभिशाप है,

जो समाज में एकता नहीं होने देते हैं, जिसका कारण है, समाज विकास नहीं कर पा रहा है।

संदर्भ

1. 'नयी फसल'–श्यौराज सिंह 'बैचैन', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या–22
2. वही, पृष्ठ संख्या– 24
3. 'भोर के अंधेरे में'–श्यौराज सिंह 'बैचेन', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या–39
4. वही, पृष्ठ संख्या– 58
5. 'उत्तर अम्बेदकर–दलित आन्दोलन : दशा और दिशा'–आनंद तेलतुमड़े, सिद्धार्थ बुक्स, दिल्ली, 2012, आवरण पृष्ठ संख्या–01,
6. 'दलितों को अनपढ़ रखने की साजिश'–डॉ. एम.एल. परिहार, बुद्धम् पब्लिशर्स, राजस्थान, 2014, पृष्ठ संख्या–09
7. 'भोर के अंधेरे में'–श्यौराज सिंह बैचेन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या–26
8. 'नयी फसल'–श्यौराज सिंह 'बैचैन', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या–56
9. 'क्रौञ्च हूँ मैं'–श्यौराज सिंह बैचेन, पृष्ठ संख्या–13
10. वही, पृष्ठ संख्या–51